फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 329 1/- नवम्बर 2015

बहुरूपी आकृतियों की प्रतिध्वनि

हम ने उस दिन कोई मीटिंग नहीं की थी। आपस में बातचीत नहीं की थी। बुला-बुला कर कहने का नहीं किया था। सब अपने में थे, शान्त थे। अपने आप ही सब में 12½ से पहले ही हाथ धोने की बात आई।

जादू हुआ क्या?

जादू नहीं, महीने में एक-दो बार ऐसा हो ही जाता है।

बहुरूपी : भिन्न-भिन्न इकाइयों वाला

आकृति : आकार, रूप, शक्ल, छवि

प्रतिध्वनि : गूँज, भनक, प्रभाव

शनिवार, 31 अक्टूबर।

प्रोडक्शन इन्चार्ज सुबह 10½ तीसरी मंजिल पर आया। तब तक नीचे से चायवाला नहीं पहुँचा था। कुछ वरकर चाय के लिये हाथ धो कर तैयार थे।

प्रोडक्शन इन्चार्ज : चायवाले के आने से पहले हाथ कैसे धो लिये? जाओ अपनी-अपनी लाइन पर जाओ। फिर साहब ने गेट बन्द कर दिया और गेट के पास खड़ा हो गया— पानी-पेशाब कर जो आये उन्हें डाँटा। फिर लाइनों पर एक सुपरवाइजर के साथ आया और बोला : लन्च 1 बजे से है, कोई भी 12½ से 1 के दौरान गेट से बाहर पानी-पेशाब-हाथ धोने नहीं जायेगा। गया तो निकाल दिया जायेगा। हर लाइन पर जा कर साहब यह बोला। और, शिफ्ट 6½ छूटती है इसलिये 6 से 6½ कोई पानी-पेशाब-हाथ धोने नहीं जायेगा।

किसी मजदूर ने कुछ नहीं कहा।

सवा बारह बजे से एक-एक कर 100 से ऊपर मजदूरों ने विभाग से बाहर जा कर हाथ-मुँह धोये और वापस विभाग में आ कर लाइनों पर काम बन्द कर चुपचाप बैठ गये। प्रोडक्शन इन्चार्ज 12½ बजे आया और गेट के पास खड़ा हो गया। एक भी मजदूर हाथ-वाथ धोने, बाथरूम जाने नहीं निकला। यह देख कर कि हर लाइन पर हाथ-वाथ धो कर, काम बन्द कर वरकर बैठे हैं, साहब ने एक-दो लाइनों पर जा कर प्यार से कहा कि काम कर लो। वहाँ के मजदूरों ने दिखावट के लिये हाथ हिलाये और साहब की पीठ होते ही फिर वैसे ही। सब लाइनों के चक्कर काट कर हर लाइन पर सीनियरों से साहब कहने लगा : यह क्या अच्छा लग रहा है? 12½ से ही काम बन्द करके बैठे हो। यह बातें 6 लाइनों पर दोहराई। कोई मजदूर कुछ नहीं बोला। सब जगह काम बन्द कर बैठे रहे। जब किसी मजदूर ने साहब की बात पर गौर नहीं किया तब साहब आखिरी लाइन पर जोर-जोर से फोरमैन से कहने लगा कि यह तेरी गलती है, पहले तू काम बन्द करता होगा, तभी पीछे वाले बन्द करते होंगे। फिर शान्त हो गया साहब — जैसे एक बार पागल हो कर शान्त होते हैं। निचली मंजिलों से इक्का-दुक्का मजदूर इस दौरान ऊपर हाथ-वाथ धोने आया तो मजदूरों ने हू-हा की साहब को यह बताने के लिये कि कोई आया है बाथरूम जाने। साहब उन वरकरों पर चिल्लाने लगता और वह वरकर लौटने लगते तब पूरे फ्लोर के मजदूर हँसते। अच्छा-खासा मजाक बन गया।

साँय 6 बजे फिर प्रोडक्शन इन्चार्ज तीसरी मंजिल पर आया ही नहीं। तीसरी मंजिल पर दिन की शिफ्ट में 9 फोरमैन, 6 सुपरवाइजर, और दो क्वालिटी वाले स्टाफ के लोग हैं। इनके ऊपर प्रोडक्शन इन्चार्ज है।

सोमवार, 2 नवम्बर को तीसरी मंजिल पर सवा बारह ही हाथ-वाथ धो कर, काम बन्द कर, लाइनों पर एक बजे के लन्च हूटर तक सब बैठे रहे। प्रोडक्शन इन्चार्ज 12½ पर आया ही नहीं।

— ग्लोब कैपेसिटर फैक्ट्री के कार्यस्थल से

असंगत बन गये है

कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। कानूनों का कार्य नहीं कर पाना, कानूनों का नाकारा हो जाना, कानूनों का असंगत बन जाना एक लक्षण है। यह इस बात का लक्षण है कि जिन सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर कानून खड़े हैं वे सामाजिक सम्बन्ध कार्य नहीं कर पा रहे, वे सामाजिक सम्बन्ध नाकारा हो गये हैं, वे सामाजिक सम्बन्ध असंगत हो गये हैं। सामाजिक सम्बन्ध और उसके कानूनों का असंगत होना नये सामाजिक सम्बन्ध की आवश्यकता की अभिव्यक्ति भी है, नये सामाजिक गठन की पूर्ववेला भी है। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, खरीद-बिक्री, हानि-लाभ, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा वाले सामाजिक सम्बन्ध की जगह क्या ? विश्व के सात अरब लोगों में इस पर मन्थन हो रहा है। हमें लगता है कि फैक्ट्री मजदूरों की इस सामाजिक मंथन में उल्लेखनीय भूमिका है। इस सन्दर्भ में आदान-प्रदान बढाने में मजदूर समाचार योगदान देने के लिये फैक्ट्री मजदूरों की बातों को प्रकाशित करता है।

मोडलामा मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री गेट पर 26 अक्टूबर को 20-25 स्त्री-पुरुष मजदूर जो वहाँ की नौकरी छोड़ चुके थे, वहाँ किये काम के पैसे लेने पहुँचे। गेट पर ठेकेदार मिला, पैसे नहीं दिये, स्त्री-पुरुष मजदूरों ने ठेकेदार के थप्पड़ मारे और जबरन फैक्ट्री के अन्दर घुस कर एच आर विभाग पहुँचे। वहाँ साहब घबरा गये और बोले कि बैठो-बैठो, पैसे देते हैं — 3 बजे सब को उनके पैसे दे दिये।"

कलमकारी श्रमिक : "383 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 700 मजदूरों ने सितम्बर 2014 में दो दिन काम बन्द किया तब ई एस आई तथा पी एफ लागू की गई। इस वर्ष होली पर कम्पनी ने एडवान्स देने से इनकार किया तो मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। पूरे दिन काम बन्द किया तब दूसरे दिन एडवान्स दिया। बोनस नहीं देते। इधर 1 नवम्बर से वेतन वृद्धि का नोटिस कम्पनी ने लगाया है।"

भैरों सूट कामगार : "सी-16 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 2 नवम्बर को साँय 4 बजे जाँच वाले आये। छत पर 400 मजदूर चाय पी रहे थे, मैनेजमेन्ट ने गेट बन्द कर सब मजदूरों को छत पर ही रखा। जब तक चैकिंग वाले रहे तब तक स्टाफ के अलावा किसी को नीचे नहीं आने दिया। रजिस्टर में हैल्परों को 9048 रुपये वाला न्यूनतम वेतन दिखाते हैं पर देते 6000 रुपये हैं।"

सुरक्षाकर्मी : "एच एस आई आई डी सी ने आई एम टी मानेसर में रोड़, पानी की टंकी, ऑफिस के लिये सिंहनाद सेक्युरिटी के जरिये 32 गार्ड रखे थे। वह ठेका 30 सितम्बर को खत्म कर दिया। लेकिन एच एस आई आई डी सी के लिये ड्युटी कर चुके 32 गार्डों को अगस्त और सितम्बर की तनखायें 4 नवम्बर तक नहीं दी थी।"

पर्ल ग्लोबल वरकर : "274 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में धागा कटिंग में 125 महिला मजदूरों को हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, बोनस नहीं। ठेकेदारों के जरिये रखे 600 टेलर पीस रेट पर, 8 घण्टे बाद काम के लिये भी रेट वही, यानी ओवर टाइम सिंगल रेट से, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, बोनस नही। कम्पनी ने प्रोडक्शन में ठेकेदारों के जरिये 150 सिलाई कारीगर और फिनिशिंग में आधे मजदूर तनखा पर रखे हैं, ई एस आई व पी एफ हैं, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से, बोनस नहीं देते। ओवर टाइम के लिये कम्पनी अधिकारी 500 रुपये महीना रिश्वत लेता है।"

ओरियन्ट क्राफ्ट मजदूर : "बी-16 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 50 घण्टे ओवर टाइम होता है तब दिखाते 5 घण्टे हैं। दुगुनी दर से 5 घण्टे का भुगतान करते हैं और फिर बचे 45 घण्टों में से 40 घण्टे के पैसे सिंगल रेट से नकद देते हैं, यानी पूरे 50 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं।"

टैन ग्रीन श्रमिक : "प्लॉट 153 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 600 कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे 125 मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। यहाँ निर्यात के लिये चमड़े के जूते और चप्पल बनते हैं। जब ऑडिट वाले आते हैं तब मैनेजमेन्ट कैजुअलों और ठेकेदारों के जरिये रखों की छुट्टी कर देती है। सितम्बर-अन्त में ऑडिट वालों के सुबह आने की सूचना पर कम्पनी ने बिना ई एस आई व पी एफ वाले 725 मजदूरों को 11½ बजे आने को यह सोच कर कहा था कि तब तक ऑडिट वाले जा चुके होंगे। ऑडिट वाले सुबह 10½ से साँय 4½ तक फैक्ट्री में रहे थे इसलिये 11½ बजे मैनेजमेन्ट ने 725 मजदूर गेट से लौटा दिये थे। इधर 2 नवम्बर को मैनेजमेन्ट ने 725 मजदूरों को कह दिया कि 4 को ऑडिट वाले आयेंगे इसलिये उस दिन उनके के लिये गेट बन्द रहेगा।"

लारा इन्टरनेशनल कामगार : "155 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में पाँच ठेकेदारों के जरिये 125 टेलर रखे हैं जिनमें 25 की ही ई एस आई व पी एफ हैं। टेलरों को बोनस नहीं देते। पीस रेट पर खींचातान में मजदूरों द्वारा 2-4 घण्टे काम बन्द करना आम बात है।"

एन सी केबल वरकर : "एक्स-56 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री नोएडा ले जाने के लिये जून में बन्द कर दी। स्थाई मजदूरों ने यूनियन लीडर को 10 प्रतिशत दे कर 32 दिन का हिसाब लिया। लेकिन, पी एफ की राशि जहाँ एक से तीन लाख रुपये होनी चाहिये वहाँ शून्य है, जीरो है। श्रम विभाग में 4½ वर्ष से 18 वर्ष की नौकरी मान कर कम्पनी ने हिसाब दिया। और, भविष्य निधि कार्यालय में जिस तारीख की भर्ती दिखाई, उसी तारीख का इस्तीफा दिखाया है!"

डिगानिया मेडिकल डिवाइसेस मजदूर : "प्लॉट 251 व 275 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्रियों में जोह्नसन एण्ड जोह्नसन का काम होता है। पेशाब की नली, दिल का वाल्व आदि मशीनों का आधा काम यहाँ व बद्दी (हिमाचल) में और आधा इजराइल, फ्रान्स, चीन में होता है। बहुत कम्पोनेन्ट बनते हैं। इस समय 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। मजदूरों में 75-80 प्रतिशत ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर हैं। स्थाई मजदूरों में दो यूनियन और दो प्रधान हैं, बल्कि 14 प्रधान हैं जो आपस में झगड़ते रहते हैं। साढे तीन वर्ष से एक भी अस्थाई मजदूर को स्थाई नहीं किया है। भर्ती के समय कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवाते हैं और 750-800 अस्थाई मजदूरों को बोनस नहीं देते। कैन्टीन में सब्जी में कीड़े होना आम बात है।"

एस्ट्रो कोर्प श्रमिक : "बी-54 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में महीने में 100-125 घण्टे ओवर टाइम होता है पर पेमेन्ट स्लिप में 3-4 घण्टे दिखाते हैं। ओवर टाइम के 100-125 घण्टों में से 3-4 घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी के घण्टों का सिंगल रेट से। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर ई एस आई व पी एफ 6500 पर ही काटते हैं। साहब कहते हैं कि यह राशि ग्रेड पर काटेंगे तो कम्पनी बैठ जायेगी।"

कुमार प्रिन्टर्स कामगार : "प्लॉट 24 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान स्थाई मजदूरों को बेसिक के डेढ की दर से और अस्थाई को सिंगल रेट से। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूरों को बोनस नहीं देते।"

इंडिया हैण्डग्राफर वरकर : "डी-15/2 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करते 100 में से 90 मजदूरों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम तनखा देते हैं।"

लाइफलोंग मेडिकिट मजदूर : "प्लॉट 18 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में सिरिंज बनाते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

इन्टरग्राफिक रिप्रोडक्शन श्रमिक : "ए-11 डी डी ए शेड्स ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित प्रिन्टिंग प्रैस में हैल्परों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम तनखा देते हैं, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, बोनस नहीं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।" **(शेष पृष्ठ चार पर)**

मुन्नार से सीखे मानेसर

5 सितम्बर को छोटे-छोटे समूहों में चलते हुये महिला मजदूर के डी एच पी लिमिटेड के मुख्यालय पर पहुँची। केरल में मुन्नार में चाय बागान मजदूरों की अपनी अद्भुत गतिविधियों का यह आरम्भ था।

स्वयं सोचते, स्वयं निर्णय लेते, स्वयं कदम उठाते चाय बागान मजदूरों की सँख्या शीघ्र ही सात हजार हो गई। सीटू, एटक, इन्टक आदि यूनियनों को छोड़ कर महिला मजदूरों ने आपस में तालमेलों को बढाया। प्रत्येक स्वयं की प्रतिनिधि बनी और जोड़ बनाने में हर एक सक्रिय हुई।

अक्टूबर-आरम्भ में के डी एच पी लिमिटेड चाय बागान में महिला मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। उत्पादन बन्द हो गया। हजारों महिला मजदूरों की सक्रियता की गूँज ने हलचलें बढा दी।

वाहवाही के लिये, अपने भाव बढाने के लिये, नाथ कर सौदा करने के लिये पार्टियों और यूनियनों के नेता "समर्थन" देने पहुँचने लगे। महिला मजदूरों ने हर रंग के लीडर को भगा दिया। सीटू लीडर से सी पी एम का विधायक बना बन्दा तो चप्पलों से पिटा। मजदूरों ने 150 नेताओं की सूची जारी की जो कम्पनी से कार, मकान, पैसे आदि लेते हैं।

डेढ महीने से जारी सक्रियता और दो सप्ताह से उत्पादन बन्द की स्थिति से निकलने का कम्पनी को कोई अन्य रास्ता नहीं मिला तब 18 अक्टूबर को मैनेजमेन्ट पीछे हटी। यूनियनों और के डी एच पी मैनेजमेन्ट के बीच दस प्रतिशत बोनस का जो समझौता हुआ था वह रद्द कर मजदूरों को बीस प्रतिशत बोनस की घोषणा की गई। संग ही संग कम्पनी ने वेतन में तीस प्रतिशत वृद्धि का ऐलान भी किया।

स्वयं की सोच, स्वयं के निर्णय, स्वयं के कदमों के इस परिणाम ने के डी एच पी लिमिटेड के आसपास के चाय बागानों के संग-संग रबड बागानों और इलायची बागानों में मजदूरों की सक्रियता बहुत बढा दी है। अखबारों, पत्रिकाओं, इन्टरनेट पर इसकी खूब चर्चा हो रही है। गूँज दूर-दूर तक सुनाई पड़ रही है। तमिल नाडु और कर्नाटक स्थित बागानों में मजदूरों में खुद की पहलकदमी के तेजी से बढने की रिर्पोटें हैं। उत्तर पूर्वी राज्यों के बागान मजदूरों में ऐसी गतिविधियों के समाचार हैं।

दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में इन पाँच वर्षों के दौरान मजदूरों की सोच और गतिविधियाँ वह गमक-धमक उत्पन्न कर रही हैं कि आशा-उत्साह-आनन्द-उल्लास हिलोरें लेने लगे हैं। यहाँ से दो हजार मील दूर मुन्नार में चाय बागान महिला मजदूरों की शुद्ध, परिष्कृत प्रतिध्वनि उत्सव की वेला है। फरीदाबाद, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, उद्योग विहार गुड़गाँव, आई एम टी मानेसर मजदूरों द्वारा आनन्द और उल्लास से मुन्नार मजदूरों से आये उपहार को ग्रहण करने का समय है यह।

फँस क्यों रहे है

प्लॉट 11 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित ब्रिजस्टोन फैक्ट्री में मजदूरों ने 2013 में अपनी पहल पर उठाये कदमों से कम्पनी पर इतना दबाव बनाया था कि मैनेजमेन्ट ने अपने लिये कुछ राहत के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों को परमानेन्ट किया। इधर सफाई कर्मियों के अप्रैल माह में दो दिन फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने ने कम्पनी की हवा निकाली और मैनेजमेन्ट को ठेकेदार बदलना पड़ा। बगल की टालब्रोस फैक्ट्री में नेताओं के फेर में पड़ कर वहाँ के मजदूरों के चोट खाने को ज्यादा समय नहीं हुआ है। ऐसे में ब्रिजस्टोन वरकर लीडरों के फेर में क्यों पड़े?

फैक्ट्रियों के अन्दर स्थाई और अस्थाई मजदूरों के तालमेल मैनेजमेन्टों की नाक में दम किये रहते हैं। ऐसे हालात में इन एक-डेढ साल में ही बजाज मोटर, बैक्सटर, ऑटो लिव, मुंजाल किरियु में मजदूरों को यूनियनों की मदद से दो-तीन-चार महीने बाहर बैठा कर मैनेजमेन्टों की पुनः नियन्त्रण की पॉलिसी से औद्योगिक क्षेत्र के मजदूर परिचित हैं। ऐसे में यूनियन लीडरों के चक्कर में ब्रिजस्टोन मजदूर क्यों आये?

24 सितम्बर को हो जायेगा। फिर 30 सितम्बर को हो जायेगा। पक्का हो जायेगा 6 अक्टूबर को। इन्टक यूनियन लीडरों की एक के बाद दूसरी थोथी बात ब्रिजस्टोन मजदूर क्यों सुनते रहे?

रंग-बिरंगे लीडरों ने 12 अक्टूबर को 270 अस्थाई और 170 स्थाई मजदूरों के सम्मुख भाषणों में कहा था कि 16 अक्टूबर की तारीख पर फैसला नहीं हुआ तो सब यूनियनें मिल कर गुड़गाँव बन्द कर देंगी। औद्योगिक क्षेत्र में कई फैक्ट्रियों के गेटों पर यूनियनों के ऐसे ऐलानों की हवा निकल चुकी है। ब्रिजस्टोन मजदूरों ने 12 अक्टूबर और फिर 3 नवम्बर को नेताओं के ऐसे ऐलान क्यों सुने? मुन्नार की महिला मजदूरों की तरह लीडरों को भगाया क्यों नहीं?

और, मजदूर अपनी ताकत देखें। रंग-बिरंगे नेताओं द्वारा महीने-भर से शान्त रखे 450 मजदूरों से ब्रिजस्टोन कम्पनी और हरियाणा सरकार बहुत भयभीत हैं। मानेसर थाने की पुलिस फैक्ट्री के अन्दर और बाहर तैनात है। सरकार ने 17 अक्टूबर को एच एस आई आई डी सी अधिकारियों के साथ एक बस और दो जिप्सी में नीली वर्दी वाले कमाण्डो भेजे, जे सी बी मशीन के साथ। एक तम्बू हटाने के लिये कमाण्डो और जे सी बी!

दिन-रात एकत्र हो कर बैठते ब्रिजस्टोन मजदूर जे सी बी से तम्बू रौंदने के बाद तिरपाल बिछा कर खुले में बैठे। इधर सरकारी अफसर और उधर कोर्ट से यूनियन लीडरों ने फोन से 3 दिन के स्टे की आड में 18 अक्टूबर को मजदूरों को तितर-बितर किया। नेताओं के 3 दिन 6 दिन बाद भी पूरे नहीं हुये। तो फिर 18 से 26 अक्टूबर के दौरान ब्रिजस्टोन फैक्ट्री के आसपास मजदूरों ने सन्नाटा क्यों रहने दिया? लीडरों की 26 अक्टूबर देख लो कि बातें सुनी ही क्यों?

3 नवम्बर को 450 मजदूर श्रम विभाग में एकत्र थे। सहायक श्रम आयुक्त को बाहर बुलाओ की आवाजें उठी तब छोटे लीडरों की "अन्दर बात चल रही है, शान्त रहो" पर बवाल क्यों नहीं किया? कुछ अस्थाई मजदूरों ने मार्के की बात कहीः "अन्दर की बात अन्दर ही रह गई दो महीने से। अब जो होना है, सब के बीच में हो।" इस पर नेताओं की लीपापोती को सहन क्यों कर लिया? और, रंग-बिरंगे यूनियन लीडरों की बकवास कि 9 नवम्बर के बाद सब यूनियनें मिल कर गुड़गाँव से बावल तक चक्का जाम कर देंगी, काली दिवाली मनायेंगे, सुन कैसे ली? नेताओं को जाने कैसे दिया? मुन्नार की महिला मजदूरों की सुनें-गुनें-करें।

न्यूनतम वेतन का आप स्वयं हिसाब लगायें

15 मार्च 1948 को संसद ने न्यूनतम वेतन कानून पारित किया। भारत क्षेत्र में सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम तनखा देने को बेगार माना गया।

इस कानून की सोच में परिवार को चार सदस्यों का मान कर चला गया। इस हिसाब से फैक्ट्री में 8 घण्टे काम करने वाले के लिये एक महीने की न्यूनतम आवश्यकतायें यह हैं :

1. पचास वर्ग गज का मकान जिसमें पानी, रौशनी और हवा का उचित प्रबन्ध हो ——————————— रुपये
2. रसोईघर——————————— रुपये
3. स्नानघर———————— रुपये
4. एक के लिये 30 कटोरी दाल ————————रुपये
5. प्लस तीन के लिये 90 कटोरी दाल———————— रुपये
6. एक के लिये 30 कटोरी हरी सब्जी————————— रुपये
7. प्लस तीन के लिये 90 कटोरी हरी सब्जी————————— रुपये
8. एक के लिये 30 अण्डे ——————————— रुपये
9. प्लस तीन के लिये 90 अण्डे——————————— रुपये
10. एक के लिये चार कटोरी मॉंस या मछली——————— रुपये
11. प्लस तीन के लिये 12 कटोरी मॉंस या मछली—————— रुपये
12. एक के लिये 6 लीटर दूध ————————— रुपये
13. प्लस तीन के लिये 18 लीटर दूध————————रुपये
14. एक के लिये तीस फल——————— रुपये
15. प्लस तीन के लिये 90 फल————————— रुपये
16. एक के लिये 15 किलो गेहूँ या बाजरा या चावल————— रुपये
17. प्लस तीन के लिये 45 किलो गेहूँ या बाजरा या चावल——————————— रुपये
18. चार के लिये 10 किलो चीनी या गुड़ ————————— रुपये
19. चार के लिये ईंधन ————————— रुपये
20. निवास से कार्यस्थल आना-जाना ———————— रुपये
21. दो के लिये किताब, कापी, फीस, वर्दी ———— रुपये
22. चार के लिये 6 वर्ग गज (वर्ष में 72 वर्ग गज) कपड़ा———————— रुपये
23. दवा-चिकित्सा ————————— रुपये
24. तीज-त्यौहार —————————— रुपये
25. शादी-विवाह —————————— रुपये
26. किताबें, नाटक, सिनेमा ——————————रुपये
27. बुढापे के लिये —————————— रुपये

इस सब का हिसाब करते हुये दिल्ली सरकार ने 1 अक्टूबर 2015 से यह न्यूनतम वेतन निर्धारित किये हैं :

अकुशल श्रमिक 9178 रुपये मासिक (8 घण्टे के 353 रुपये)

अर्ध-कुशल श्रमिक 10140 रुपये मासिक (8 घण्टे के 390 रुपये)

कुशल श्रमिक 11,154 रुपये मासिक (8 घण्टे के 429 रुपये)

और हरियाणा सरकार ने 1 नवम्बर 2015 से यह न्यूनतम वेतन निर्धारित किये हैं :

अकुशल श्रमिक 7600 रुपये मासिक (8 घण्टे के 292 रुपये)

अर्ध-कुशल अ 7980 रुपये मासिक (8 घण्टे के 307 रुपये)

अर्ध-कुशल ब 8379 रुपये मासिक (8 घण्टे के 322 रुपये)

कुशल अ 8798 रुपये मासिक (8 घण्टे के 338 रुपये)

कुशल ब 9238 रुपये मासिक (8 घण्टे के 355 रुपये)

उच्च कुशल श्रमिक 9700 रुपये मासिक (8 घण्टे के 373 रुपये)

आप अपना हिसाब लगा लें।

निमंत्रण

नवम्बर में 29 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर सॉंय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014
E-mail < majdoorsamachartalmel@gmail.com>
E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

- ✶ *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*
- ✶ *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।*
- ✶ *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

असंगत बन गये है

भगवती ऑटो कामगार : '' प्लॉट 256 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बोनस नहीं देते।''

कोसमिक/क्रियेटिव निटवेयर वरकर : '' डब्लू-41 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते। नवम्बर 2014 में ई एस आई व पी एफ लागू किये थे। पी एफ नम्बर नहीं बताने पर इधर सितम्बर से मजदूरों ने पी एफ कटवाना बन्द कर दिया है। पी एफ के काटे पैसे कम्पनी ने जमा नहीं किये हैं और ई एस आई कार्ड में दिया पता कहीं अन्य स्थान का है।''

श्रीराम इंजिनियर्स मजदूर : '' प्लॉट 54 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते ठेकेदार के जरिये रखे 50 मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, और बोनस नहीं देते।''

कुछ पते : 1. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त 14 भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली — 110066

2. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सी आई जी मार्ग, नई दिल्ली — 110002

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।